No. of Printed Pages : 11

एम.टी.टी.-003

POST GRADUATE CERTIFICATE IN BANGLA HINDI TRANSLATION PROGRAMME (PGCBHT)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2017

एम.टी.टी.-003 : बांग्ला-हिन्दी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. बांग्ला-हिंदी अनुवाद में मातृभाषा के प्रभाव से उत्पन्न कुछ विसंगतियों का उल्लेख करते हुए बताइए कि उन भूलों से कैसे बचा जाए? **20**

अथवा

कहानी या उपन्यास का अनुवाद करते हुए किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है?

001902

2. निम्नलिखित बांग्ला शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए : **5**

শুচিবাত	আলো	এখনি	দুআন্তে
চিখিল	হাঁটিয়ে	বিশ্রী	চোখ
সকাল	পাঁক		

3. निम्नलिखित शब्दों के बांग्ला पर्याय लिखिए : **5**

रिश्ता	ठहाका	हाशिया	भगोड़ा
उतरना	फिलहाल	माँग	मुँहफट
घरवाली	हथेली		

4. पाँच ऐसे तत्सम शब्द लिखिए, जिनके रूप हिंदी और बांग्ला में समान हैं, किंतु अर्थ भिन्न हैं। दोनों भाषाओं में उनके अर्थ बताते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए। 20

5. निम्नलिखित में से **किन्हीं तीन** का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 3x10=30

(a) প্রতি বছর দশেরায় এমনিতেই ধূমধাম হয়, কিন্তু এবার ন'বছরের জ্ঞানের কাছে দশেরার প্রতীক্ষা ছিল সবচেয়ে বেশি। নবরাত্রিতে পুরো ন'দিনই জ্ঞান মা দুর্গার দর্শন করতে গিয়েছে, একদিনও গরহাজির হয় নি। আগে কখনও ওর মনে এত শ্রদ্ধা জাগে নি। এই ন'দিন কীভাবে কেটে গেছে, জ্ঞান জানেই না। শেষপর্যন্ত আজ দশেরা এল।

সকাল থেকে জ্ঞান খুব ছট্‌ফট্‌ করছে, কিন্তু দিন কাটার নামই নেই। সকাল থেকেই ও গলির মোড়ে বসে বড় রাস্তার দিকে তাকিয়ে আছে, সন্ধ্যা হলেই সেখান দিয়ে সারা শহরের দুর্গা মূর্তি বিসর্জনের জন্য বেরিয়ে পড়ে। রাস্তার ধারে হাজার লোকের ভিড় জমা হয়ে যায়, বাড়ির ছাদে, দোকানের সামনের রোয়াকে দুপুর থেকেই লোকে দুর্গার শোভাযাত্রা দেখার জন্য এসে বসে থাকে। বসে অপেক্ষা করতে করতে লোকে খায়, গল্প করে আর রাস্তায় অজস্র আবর্জনা ছড়িয়ে পড়ে। সন্ধ্যা হয়ে আসতেই

আনন্দের ভিড় আরও বেড়ে যায়। তাজিয়া বার হওয়ার সময় যেমন হয় এটা প্রায় সেই রকম, তফাত শুধু হিন্দু-মুসলমানের, না হলে সবই একরকম-- সেই ভিড়, সেই উন্মাদনা, সেই আবর্জনা এবং শেষে কাঁদা ভর্তি লক্ষ্মী পুকুর। ওই পুকুরেই দূর্গা মূর্তি বিসর্জিত হয় আর ওখানেই তাজিয়া শেষ হয়। সংখ্যার বিচারে তাজিয়া ও দুর্গা মূর্তির অনুপাত প্রায় সমান, প্রতি বছরই বেড়ে যায় আর লক্ষ্মী পুকুর ছোট হয়ে পড়ে।

(b) হানিয়া মহান। মহান তার প্রেম ও আত্মবলিদান-- এই ধরনের কথাবার্তা আশেপাশের গ্রামে গ্রামে ছড়িয়ে পড়ে। জায়গায় জায়গায় লোকে বলাবলি করে হানিয়া প্রাণ দিয়েছে কিন্তু পুলিসের হাতে ধরা দেয় নি। হানিয়া গর্ভবতি ছিল, মা হতে চেয়েছিল। তার এই ইচ্ছা অপূর্ণই রয়ে গেছে।

এই ঘটনার কিছুদিন বাদে সেই টিলার উপরে ঠিক সেই জায়গায় একটা ঝুপড়ি তৈরি হয়, তাতে পরে একটা পাথরের মূর্তি রাখা হয়। ঝুপড়ির চুড়ায় লাগানো ঝাণ্ডায় লেখা হয় - হানিয়া দেবী। দূর-দূরান্ত থেকে নিঃসন্তান দম্পতি এই টিলায় খালি

পায়ে হেঁটে আসে। তাদের মনে এটাই কামনা যে হানিয়া দেবী নিজে মা হতে চেয়েছিল, নিজের পতির সাথে যে জীবন্ত দগ্ধ হয়েছে সে কাউকে নিঃসন্তান থাকতে দেবে না। যে দম্পতি এখানে তান্ত্রিক অনুষ্ঠান করে হানিয়া দেবীকে প্রসন্ন করবে আর সারারাতে এই টিলায় থাকবে, তার কোল অবশ্যই ভরে উঠবে। পূর্নিমার রাতেই এই অনুষ্ঠান হবে। সেদিনও ছিল পূর্নিমার রাত, এই টিলার উপরে সেদিন অভয় ও হানিয়ার শরীর একসাথে জ্বলে ছাই হয়ে গিয়েছিল। চাঁদনী রাতে সেই চিতার আগুন তৃতীয় প্রহর অবধি ধিক্‌ধিক্‌ করে জ্বলেছিল।

(c) মুখ্যমন্ত্রী নেতৃত্বাধীন পশ্চিমবঙ্গ সরকারের শিক্ষা দফতরে আরও একটি অভিণব প্রকল্প চালু করতে চলেছে। প্রাথমিক স্তরের শিক্ষক-শিক্ষিকাদের দক্ষতা উৎকর্ষতার জন্য রাজ্যে প্রথম চালু হল সেন্টার ফর স্কিল আপগ্রেডেশন। আগামী মার্চ মাসের মধ্যেই সিউড়ির বিদ্যাসাগর ভবনে বীরভূমের জেলা প্রাথমিক শিক্ষা কেন্দ্রের সদর দফতরে এর কাজ শুরু হবে।

বর্তমান সরকারের সময়কালে শিক্ষা ব্যবস্থায় আমূল পরিবর্তন হয়েছে। এর ফলে ছাত্রছাত্রীদের

শিক্ষার মানও অনেক উন্নত হয়েছে। অবৈতনিক শিক্ষা ব্যবস্থায় গোড়া থেকে পড়ুয়াদের শিক্ষার মানের দিকে গুরুত্ব দিতে এই প্রয়াস। আজকের শিশুরা ভবিষ্যতের অগ্রদূত। তাই তাদের ভবিষ্যতের দিকে খেয়াল রাখতে অভিনব উদ্যোগ। এই কেন্দ্রগুলিতে পড়াশোনার জন্য বই, ম্যাগাজিন, জার্নাল, ইন্টারনেট সুবিধাযুক্ত কম্পিউটার ইত্যাদি। এছাড়া স্কুল, কলেজ, বিশ্ববিদ্যালয়ের শিক্ষক-শিক্ষিকাদের পর এবার প্রাথমিক স্কুলের শিক্ষক-শিক্ষিকাদের অরিয়েন্টেশন কোর্স করার সুবিধাও থাকবে সেখানে।

সরকারের সাহায্যার্থে গত পাঁচ বছরে ১৫টি বিশ্ববিদ্যালয় এবং ৪৬টি কলেজ চালু হয়েছে। ২৫০০ প্রাথমিক ও ৩৫০০টি মাধ্যমিক বিদ্যালয় স্থাপন করা হয়েছে।

(d) পুব খোলা গাড়িবারান্দা। শেষ বিকেলের মিঠে হাওয়া। হাভেলির বাগানে বড়-বড় গাছের পাতায় হাল্কা কাঁপন। ডালে বসা মরিয়া কোকিল। ডেকে চলেছে তো চলেছেই। দাদুর আমলের ইজিচেয়ারটায় আধশোয়া মহিম। আবেশে চোখ বন্ধ। বড় ভাল লাগছে হাওয়ার শিরশিরানিটা। বাঁ

হাতে কব্জি থেকে কনুই ছোঁয়া মোটা প্লাস্টার। ডানপায়েও তাই। গোড়ালি থেকে হাঁটু অবধি উঠে এসেছে প্লাস্টারের ঘেরাটোপ। সরাসরি শিনবোনে পড়েছিল লাঠির মার। দু'টুকরো সঙ্গে-সঙ্গে। এখনও অন্তত দেড় মাস লাগবে প্লাস্টার কাটতে। তারপর ক্রাচ। সব ঠিকঠাক চললে খাড়া হয়ে দাঁড়াতে-দাঁড়াতে আরও মাসচারেক। ডাক্তারের মত অনুযায়ী। খবর পেয়ে দুই মেয়ে মহাশ্বেতা আর মহাতপা - টোপাই-কুলাই-ছুটে এসেছে শ্বশুরবাড়ি থেকে। বড় জামাই ভিলাইয়ের ইঞ্জিনিয়ার। সেখানেই কোয়ার্টার। ছোট জামাইদের বনেদি পারিবারিক ব্যবসা। উত্তর কলকাতার শোভাবাজারে বিশাল বাড়ি। প্রথমজনের এক মেয়ে। ছোটটির দু'টি। এক ছেলে, এক মেয়ে। কচিকাঁচাদের হল্লাহাটি, মেয়েদের দৌড়োদৌড়ি। বাচ্চাদের ধমক, বকুনি। মিনিটে-মিনিটে বাপের কাছে ছুটে আসা। ভালই লাগছে মহিমের। আসলে হাভেলিতে অনেকদিন শিশুদের কলরব শোনা যায়নি। মনোজ। ছোট ভাই। নিঃসন্তান। অপরূপা সুন্দরী স্ত্রী শোভা। ইসলামপুরের মিত্রবাড়ি থেকে নিজে পছন্দ করে

এনেছিলেন মহিম। বিয়ের পর এতগুলো বছর কেটে গেল। কিছু হল না।

(e) ভারতে তিনি প্রায় সারা দেশে ঘুরেছেন, সবজায়গায় প্রচুর সম্মান ও শ্রদ্ধা পেয়েছেন। দেশ ও তার লোকদের সম্পর্কে যা দেখেছেন সে সব নিঁখুতভাবে লিপিবদ্ধ করেছেন, কিন্তু কিছু বিচিত্র ও মজার কথা শুনে সেগুলিও লিখে গেছেন। পাটলিপুত্রের কাছে প্রসিদ্ধ নালন্দা বিশ্ববিদ্যালয়ে অনেক বছর কাটিয়েছেন। এই বিশ্ববিদ্যালয়ে নানা বিষয় নিয়ে পড়াশোনা করা যেত, এবং দেশের বহু দূর-দূর স্থান থেকে এখানে ছাত্ররা পড়তে আসত। একসময়ে কিন্তু না হলেও দশহাজার ছাত্র ও ভিক্ষু এখানে বাস করত। হুয়েন ত্সাং এখানে আইনের স্নাতকোত্তর উপাধি পান এবং শেষপর্যন্ত বিশ্ববিদ্যালয়ের উপাচার্য হয়েছিলেন।

হুয়েন ত্সাং-এর বই 'সি -ইউ কি' অর্থাৎ পশ্চিমী দেশের বিবরন (মানে ভারতবর্ষ), পড়তে চমৎকার লাগে। যে সময়ে চিনের রাজধানী সি-আন-ফু ছিল শিল্প ও শিক্ষার পীঠস্থান, সেই সময়ে একটি উন্নত সভ্যতার ও ভদ্রমনোভাবাপন্ন দেশ থেকে

আসা মানুষের কাছ থেকে ভারত সম্বন্ধে মন্তব্য এবং বর্ণনা যথেষ্ট মূল্যবান। তিনি আমাদের তখনকার শিক্ষা ব্যবস্থা সম্পর্কে বলেছেন, অল্প বয়সে শুরু করে শিক্ষা এগিয়ে যেত ধাপে-ধাপে বিশ্ববিদ্যালয় পর্যন্ত, সেখানে পাঁচটি জ্ঞানের বিষয় পড়ানো হত : (১) ব্যাকরণ, (২) কলা ও শিল্পবিদ্যার বিজ্ঞান, (৩) চিকিৎসাবিজ্ঞান, (৪) ন্যায়শাস্ত্র এবং (৫) দর্শনশাস্ত্র।

6. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** का बांग्ला में अनुवाद कीजिए : **2x10=20**

(a) वैद्यजी के दवाख़ाने से निकलकर अनिल ने एक बार फिर कलकत्ते की सड़कें नापनी शुरू कीं और भटकता-भटकता वह एक ढाबे के सामने जा खड़ा हुआ।

"क्यों भाई, कुछ कामकाज है?" अनिल ने मालिक जैसे दिखने वाले एक आदमी के पास जाकर पूछा।

ढाबे के मालिक ने सिर से पाँव तक अनिल का जायज़ा लिया : कपड़े बेशक मामूली हैं, मगर चेहरे-मोहरे से अच्छे घर का मालूम होता है। कुछ दुविधाग्रस्त लहज़े में वह बोला, "कामकाज तो है, तुम करोगे?"

"क्यों नहीं! बताओ, क्या करना होगा?" अनिल की

आवाज़ में दृढ़ता थी।

''ग्राहकों को पीढ़ा देकर बिठाना, खाना परोसना और वे खाकर चले जाएं तो उनके जुठे बर्तन माँजना। यही काम है, कर सकोगे?''

''करूँगा!''

''लेकिन दो वक़्त का खाना छोड़कर पैसे-वैसे कुछ नहीं मिलेंगे। और हाँ, काम ख़त्म करके यहीं, ढाबे के सामने सो सकते हो।''

(b) मैं और मेरी पत्नी न्यूयॉर्क जा रहे थे। वहाँ हमारे बेटे निर्झर ने अपनी नई नौकरी ज्वाइन कर ली थी और उसे लाग आइलैंड के रेस्टोरेंट होटल में ठहराया गया था/ऐसा इसलिए कि उसे एक डेढ़ महीने बाद ही अपना प्रोजेक्ट समेट कर भारत लौटना था। लाग आइलैंड, न्यूयॉर्क का उपनगर है।

हम कागोर्डिया एयरपोर्ट पर उतरे। बाहर निकले तो एक व्यक्ति हमारे नाम की पहचान पट्टी लेकर खड़ा था-छः फुट लंबा, गोरा चिट्टा, सूटेड बूटेड। हम उसके पास गए तो वह हमारी ओर देख कर बोला-

-''मिस्टर एंड मिसेज गर्ग!''

-'हाँ' - मैंने उत्तर दिया।

उसने ट्रॉली पर से हमारा सामान उतारा। ट्रॉली एक कोने में खड़ी की। फिर हमारा सामान उठाकर आगे बढ़ता हुआ बोला-''कृपया मेरे पीछे आइए!''

(c) मैंने यह आमंत्रण इसलिए स्वीकार कर लिया था कि मेरा बेटा हरीश पीट्सबर्ग में रहता है और मैं उसके साथ कुछ समय बिताना चाहता था। दरअसल हरीश पीट्सबर्ग में कुछ बड़ी कंपनियों को छोटी मछलियाँ सप्लाई करने का कारोबार करता है, लेकिन उसका पसंदीदा भोजन भुना हुआ मुर्गा ही है। संगोष्ठी समाप्त हो गई। मैं अपने बेटे हरीश के पास चार महीने रहा। पूरे एक सौ बीस दिन बाद जब हैदराबाद वापस आया तो पंडित सूर्यप्रकाश और उनके अद्भुत मुर्गे से मिलने की इच्छा तीव्र हो गई। लेकिन जब मैं उनके घर के पास पहुँचा तो वहाँ अजीब-सी मनहूसियत छाई हुई थी। मैं किंकर्तव्यविमूढ़-सा खड़ा घर की ओर देखता रहा।

साथ वाले मकान का चौकीदार मेरे पास आकर बड़े ही निर्लिप्त भाव से बोला, ''चले गए। हमेशा के लिए। पंडितजी और उनका मुर्गा दोनों।''

(d) शाहजहाँपुर रूहेलखंड का एक जनपद मात्र नहीं है। वास्तव में, इसके भौगोलिक भूखंड का परिचय, इसका अधूरा

परिचय है। इसकी सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक परिस्थितियाँ जाने बिना इस जनपद की पूरी तस्वीर नहीं बनाई जा सकती। यहाँ का रहन-सहन, खान-पान, बोली-बानी, मेल-मिलाप, रूढ़ियाँ-परंपराएँ, विश्वास-अंधविश्वास, और प्राचीनता-आधुनिकता आदि विशेषताएँ मिलकर इसे ऐसा विशिष्ट चरित्र प्रदान करती हैं कि यह जनपद रूहेलखंड मंडल में ही नहीं बल्कि पूरे भारत में अपनी खास पहचान कायम करता दिखाई देता है। चाहे इतिहास हो या राजनीति, शिक्षा हो या साहित्य, खेल हो या राष्ट्र के लिए जान गंवा देने की बाजी, हिंदी हो या उर्दू हर क्षेत्र में इस जनपद ने अपनी अलग छाप छोड़ी है।